संपादक का नोट

जकर्याह 2:5 ''यहोवा की यह वाणी है, कि मैं आप उसके चारों ओर आग की सी शहरपनाह ठहरूँगा, और उसके बीच में तेजोमय होकर दिखाई दूँगा।' ''

बाइबिल हमें स्पष्ट रूप से कई तरीकों से समझाता है कि कैसे परमेश्वर इस्राएलियों के साथ जंगल में दिन के समय बादल के खम्भे के रूप में और रात में आग के खम्भे के रूप में रहते थे। आज भी, परमेश्वर अपने लोगों का मार्गदर्शन करते है और वादा करते है कि वह हमारे चारों ओर आग की दीवार होंगे। यदि हम चल रहे समाचार देखें, तो हम दुनिया भर में कितनी परेशानी, दर्द और दुःख देखते हैं, और भविष्य कितना अनिश्चित लगता है। परन्तु परमेश्वर का वचन हमें आश्वस्त करता है, जैसा कि नहूम 1:7 में दिया गया है ''यहोवा भला है; संकट के दिन में वह दृढ़ गढ़ ठहरता है, और अपने शरणागतों की सुधि रखता है।'' जब प्रभु की कृपा और दया हमें घेर लेती है, तो हमें किसी भी स्थिति से डरने की जरूरत नहीं है। मुसीबत के समय में, हमारा काम केवल उनके शक्तिशाली पंखों के नीचे रहना और उन पर पूरा भरोसा और विश्वास रखना है। जैसे जंगल में इस्राएलियों को जंगली जानवरों के हमलों से डरने की ज़रूरत नहीं थी, वैसे ही हमें भी शैतान के किसी भी हमले से डरने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि यीशु हमारी ढाल और रक्षक है! भजन संहिता 91 स्पष्ट रूप से परमेश्वर की उपस्थिति में बने रहने की सुरक्षा का सारांश प्रस्तुत करता है।

दिन का समय हमेशा के लिए जारी नहीं रहेगा; हर किसी के जीवन में रात का समय आएगा। यहोवा ने समय को दिन और रात में बाँटा, कि दिन में मनुष्य काम कर सके; क्योंकि रात में ऐसा करना संभव नहीं होगा। यह दुनिया इस समय रात के समय की ओर बढ़ रही है। यशायाह 60: 2 ''देख, पृथ्वी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकार छाया हुआ है; परन्तु तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर प्रगट होगा।'' इसलिए परमेश्वर के वचन का प्रचार करना और दिन में उनके राज्य के लिए अच्छे कार्य

करना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि एक समय ऐसा आएगा जब हम कुछ नहीं कर पाएंगे। उस समय, केवल अतीत में हमने प्रभु और उनके राज्य के लिए किए गए अच्छे कामों को ही ध्यान में रखा जाएगा। प्रभु यीशु स्वयं दिन के हर पल अपने पिता की इच्छा को पूरी तरह से पूरा करने के लिए उत्सुक थे। जैसा कि वह यूहन्ना 9:4 में कहता है, ''जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है; वह रात आनेवाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता।''

कुलुस्सियों 3:24–25 ''24 क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें इस के बदले प्रभु से मीरास मिलेगी; तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो। 25 क्योंकि जो बुरा करता है वह अपनी बुराई का फल पाएगा, वहाँ किसी का पक्षपात नहीं।'' जब हम प्रभु और उनके राज्य के लिए कोई अच्छा काम करते हैं, तो हम भरपूर और फलदायी फसल काटेंगे। उसी समय, जब हम यहोवा और उनके राज्य के विरुद्ध बुरे काम करेंगे, तो हम पापी और बुरी चीजों को बहुतायत से काटेंगे। हमें उस भीड़ की तरह नहीं होना चाहिए जो यीशु मसीह के चारों ओर केवल यह देखने के लिए कि वह क्या कर रहे थे और उसमें दोष खोजने की कोशिश करते रहते थे। इसके बजाय, हमें उस महिला की तरह होना चाहिए जिसे लहू बहने का रोग था, जो केवल यीशु मसीह को छूने और उनकी शक्ति का अनुभव करने के लिए तरसती थी। हमें प्रभु का प्यासा होना चाहिए, और जोश और उत्साह के साथ उनकी सेवा करनी चाहिए।

इसलिए प्रिय भाइयों और बहनों, हमारे स्वर्गीय पिता की कृपा से दिए गए दिन के समय का उपयोग हमारी आत्माओं और दूसरों के लाभ के लिए करें, और आप जहां कहीं भी हों, हमेशा अच्छी गवाही बनकर यीशु का नाम उठाएं!

जब तक दुबारा मिलें,

पास्टर सरोज म।

परमेश्वर का वचन सत्य और स्थायी है।

प्रकाशितवाक्य 1:16 ''वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिये हुए था, और उसके मुख से तेज दोधारी तलवार निकलती थी। उसका मुँह ऐसा प्रज्वलित था, जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है।'' (पास्टरजी कहते हैं) जब मैंने परमेश्वर को स्वीकार किया और लगभग इस पवित्र मंदिर में आने लगीं, कुछ साल पहले इस मंदिर में काफी समस्या थीं। मेरे अंदर तरह–तरह की भावनाएँ आती थीं, जिन्हें शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। लेकिन, मैं समझ सकती थी कि पवित्र मंदिर में कुछ गलत हो रहा है। कुछ साल बाद, जब मेरा जीवन पूरी तरह से बदल गया, तो यह भावना और बढ़ गई। कभी–कभी मैं इस भावना से डरती थी और अपने विश्वास पर भी संदेह करती थी, मैं सोचती थी कि यह भावना क्यों आती है। मैं अपने दिल और दिमाग में जो कुछ भी होता था उसके बारे में तत्कालीन पास्टरजी को सूचित करती थी। जब पवित्र मंदिर के सदस्यों पर सुधार आता था, तो उनके झूठ, पाप और अधर्म सामने आते थे। कई लोगों ने उस सुधार को अपना लिया और अभी भी सभा में निहित हैं, जो सुधार को नापसंद करते थे उन्हें उखाड़ फेंका गया और कुछ ने सभा छोड़ दिया। बहुत से लोग मुझसे प्यार करते थे और मुझसे नफरत करते थे / मुझे चोट पहुँचाते थे। यह सिलसिला कई सालों तक चलता रहा। मुझे अपने भीतर डर लगने लगा कि क्या ये सही है या गलत। जो भी मुझे लगता है, वो सही है या गलत, मैंने भी कुछ समय के लिए अविश्वास किया। एक दिन, हमने भाई डी.जी.एस दिनाकरन, जो चेन्नई में थे उनसे मिलने का फैसला किया। इस सभा की एक बहन; पास्टर गॉडविन और मैं भाई से मिलने गए। उनकी सभा के दौरान भाई दिनाकरन ने मुझ पर हाथ रखा और लगभग 40 मिनट तक भविष्यवाणी की और अंत में आत्मा ने शक्तिशाली सेवक के माध्यम से कहा, **''मैंने तुम्हें अपने हाथों में रखा है, कोई भी तुम्हें मेरे हाथों से नहीं छीन सकता''।** यह सुनकर, ''मैं प्रभु परमेश्वर से और भी अधिक प्यार करने लगी, मैं भी लगातार और फूट–फूट कर रोने लगी'' क्योंकि मैंने कुछ समय के लिए अपने प्रभु परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया था। आज भी, जब मैं परमेश्वर का वचन सुनती हूँ तो डर से काँप उठती हूँ, प्रभु परमेश्वर ने अपने हाथों में सात तारे थामे हुए है, और मुझे भी उन्हीं हाथों में थाम रखा है। हम में से बहुत से लोग परमेश्वर के हाथों में हैं। सभा में मुझे जितनी भी समस्याओं का सामना करना पड़ता था, घर में उससे भी अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता था। और बाहर की दुनिया ने मेरा मजाक उड़ाया, तो अंदर से मेरे परिवार ने भी ऐसा ही किया। तो उस समय मैं वास्तव में प्रभु परमेश्वर की सच्चाई, उनकी इच्छा और मेरे लिए उनकी योजना जानना चाहती थी। आज, जैसा कि हम ने पढ़ा फिर से इस वचन को पढ़ते हैं प्रकाशितवाक्य 1:16 ''वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिये हुए था, और उसके मुख से तेज दोधारी तलवार निकलती थी। उसका मुँह ऐसा प्रज्वलित था, जैसा

सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है।'' हम सभी को यह याद रखना चाहिए कि उनके हाथों में हमारा भी स्थान है।

आइए हम पढ़ें यशायाह 62:3 ''तू यहोवा के हाथ में एक शोभायमान मुकुट और अपने परमेश्वर की हथेली में राजमुकुट ठहरेगी।'' जिस परमेश्वर ने सात तारों को अपने हाथों में थामे रखा है, उसी प्रभु परमेश्वर ने आपके और मेरे लिए अपने हाथों में स्थान रखा है। आइए देखें कि उनके दाहिने हाथ में सात तारे और सोने की सात दीवट होने का क्या अर्थ है, आइए पढ़ें प्रकाशितवाक्य 1:20 ''अर्थात् उन सात तारों का भेद जिन्हें तू ने मेरे दाहिने हाथ में देखा था, और उन सात सोने की दीवटों का भेद : वे सात तारे सातों कलीसियाओं के दूत हैं, और वे सात दीवट सात कलीसियाएँ हैं।'' हम जानते हैं कि सात तारों का अर्थ है यानी सात सभा और परमेश्वर के दूत उनके सेवक हैं। प्रभु परमेश्वर के सेवकों और शिष्यों को प्रभु उनके स्वर्गदूतों के रूप में देखते हैं। प्रकाशितवाक्य 2:1 "इफिसुस की कलीसिया के दूत को यह लिख : ''जो सातों तारे अपने दाहिने हाथ में लिये हुए है, और सोने की सातों दीवटों के बीच में फिरता है, वह यह कहता है कि'' परमेश्वर को अपने स्वर्गदूतों को लिखकर देने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह उनसे सीधे वही बात कर सकते है, जो वह चाहते हैं की वे जाने। लेकिन यहाँ यह वचन कहता है, ''ये बातें लिखो – अर्थात् परमेश्वर प्रेरित यूहन्ना से कहते है कि सात कलीसियाओं और मण्डली को लिखो, ताकि उसके सेवकों और शिष्यों को पता चले कि परमेश्वर उनसे क्या चाहते है। इस प्रकार, परमेश्वर के दूत उनके सेवक और शिष्य हैं। आइए हम फिर से पढ़ें प्रकाशितवाक्य 2:1 ''इफिसुस की कलीसिया के दूत को यह लिखः ''जो सातों तारे अपने दाहिने हाथ में लिये हुए है, और सोने की सातों दीवटों के बीच में फिरता है, वह यह कहता है कि'' प्रकाशितवाक्य 3:1 ''सरदीस की कलीसिया के दूत को यह लिखः ''जिसके पास परमेश्वर की सात आत्माएँ और सात तारे हैं, वह यह कहता है कि मैं तेरे कामों को जानता हूँ : तू जीवित तो कहलाता है, पर है मरा हुआ।'' जब परमेश्वर ने प्रेरित यूहन्ना को स्वर्गदूतों को लिखने के लिए कहा, तो उनका मतलब इन सात कलीसियाओं के सेवकों को लिखना था। परमेश्वर की दृष्टि दासों पर लगी रहती है, कि वे किस उत्साह से यहोवा के लिए काम करते हैं। परमेश्वर देखते है कि क्या सेवक सच्चाई और धार्मिकता से कलीसियाओं की सेवा कर रहे हैं, वह सेवकों को देखते है, वह उनसे प्यार करते है और उन्हें सात सितारों के साथ अपने हाथों में रखते है। आइए हम पढ़ें यशायाह 49:16 ''देख, मैं ने तेरा चित्र अपनी हथेलियों पर खोदकर बनाया है, तेरी शहरपनाह सदैव मेरी दृष्टि के सामने बनी रहती है।'' हमारे शक्तिशाली प्रभु, जिन्होंने अपने हाथों में सात तारे थामे रखा है, कहते हैं, ''मेरे लोग मेरी हथेलियों पर खुदे हुए हैं, इसलिए कोई भी उन्हें प्रभु के हाथों से हटा नहीं सकता''। यीशु ने कहा है यूहन्ना 10:18 ''कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन् मैं उसे आप ही देता हूँ। मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और उसे फिर ले लेने का भी अधिकार है : यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है।'' उनके हाथों से कोई उनके बच्चों को नहीं छीन सकता, न

ही कोई उनके हाथों में भी आ सकता है। यह परमेश्वर पिता है जिन्होंने यीशु मसीह को हमें उनके हाथों में रखने या हमें उनके हाथों से दूर करने का अधिकार दिया है। ''उन दिनों, इस पवित्र मंदिर में जो कुछ भी होता था, मैं अपने घर पर नहीं बैठ सकती थी, प्रभु परमेश्वर मुझे खींच कर किसी तरह इस पवित्र मंदिर में लाते थे। इस स्थान पर हमेशा परमेश्वर की धधकती नजर रहती है। इस मंदिर में अलग–अलग तरह से अंधकार, पाप और अधर्म हो रहा था। यह मंदिर उन दिनों बाजार की तरह था। जैसा कि वचन कहता है ''आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।'' प्रभु परमेश्वर ने इस स्थान पर जो भी वचन दिया है, वह आज तक पूरा हुआ है। उन दिनों इस स्थान पर वचन बहुत प्रबल नहीं था। लेकिन परमेश्वर ने इस स्थान पर अपना कार्य करना जारी रखा और अभी भी इस स्थान पर उनका कार्य करना जारी रखा है। पिता परमेश्वर ने यीशु मसीह को अधिकार दिया है इसलिए वे कहते हैं, ''जिन्हें मैं हटाऊँगा वे जड़ से उखाड़ दिए जाएंगे। जिन्हें मैं रोपूंगा, वे जड़ ही से जुड़े रहेंगे।''

हमने भजन संहिता 119 में देखा है, जो वचन के अनुसार जीते हैं, जो वचन का भय मानते हैं, जो वचन पर विश्वास करते हैं, वे सभी धन्य लोग हैं। हमारा हृदय उपदेशक पर नहीं बल्कि 'वचन' पर होना चाहिए। वचन जीवित है, वचन ही सत्य है, वचन हमारे जीवन में काम करेगा। इस प्रकार यीशु कहते हैं, ''आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।'' इसलिए, इस पवित्र मंदिर में प्रचारित वचन को हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। इसके बजाय, हमें वचन को स्वीकार करने और अपने जीवन में फल लाने की आवश्यकता है। प्रेरित पौलुस थिस्सलुनीके और बेरिया गए, परन्तु थिस्सलुनीकियों ने पौलुस की बातों पर विश्वास किया, जबकि बिरीया के लोगों ने उस वचन पर विश्वास किया जिसका पौलुस ने प्रचार किया था। प्रेरित पौलुस द्वारा जो भी वचन का प्रचार किया गया था, लोगों ने पवित्र मंदिर में जाकर और पवित्र शास्त्र को फिर से पढ़कर एक बार फिर पुष्टि की, क्योंकि उनके घरों में कोई बाइबिल नहीं थी। उन्होंने हमेशा प्रेरित पौलुस द्वारा प्रचारित परमेश्वर के वचन की प्रति जाँच की। अंत के समय में, हमें भी बहुत सावधान रहना चाहिए, कई प्रचारक हमारे बीच में आएंगे और वचन को तोड़–मरोड़ कर हमें प्रचार करेंगे। लेकिन, हमें हमेशा वचन पर विश्वास करना चाहिए और एक बार फिर घर पर वचन को फिर से पढ़ना चाहिए। हमारा प्रभु एक कभी न बदलनेवाला परमेश्वर हैः कल, आज और हमेशा के लिए वह एक ही परमेश्वर है। मैंने अपने संदेश के दौरान कभी किसी को ऊबते नहीं देखा, या मेरे संदेश के दौरान लोगों को सोते हुए नहीं देखा। क्योंकि वचन में सामर्थ है। यीशु मसीह ने 3 दिन और रात प्रचार किया, लोग अपनी भूख–प्यास भूल गए और उनकी बात ध्यान से सुनते रहे। यह वचन का सामर्थ है। आइए हम पढ़ते हैं भजन संहिता 119:158 कहता है ''मैं विश्वासघातियों को देखकर उदास हुआ, क्योंकि वे तेरे वचन को नहीं मानते।'' प्रभु ने माना कि ये अधर्मी लोग थे और उनसे दूर रहना चाहते थे। जब हम वचन पर विश्वास नहीं करते हैं और वचन की धार्मिकता

के अनुसार नहीं चलते हैं, तो स्वर्गदूत हमें अधर्मी लोगों के रूप में गिनते हैं। हम एहसान फरामोश और नासमझ लोग हैं।

हम जानते हैं कि कई उपदेशों में, प्रेरित पौलुस ने मानवीय तरीके से बात की थी, थिस्सलुनीकियों को उसका उपदेश पसंद आया और उस पर विश्वास किया, क्योंकि यह उनके और उनके जीवन के तरीके के उचित था। लेकिन बिरीया के लोगों ने दुबारा जाँच की कि प्रेरित पौलुस ने क्या प्रचार किया और फिर से वचन की पुष्टि की। आइए पढ़ें प्रेरितों के काम 17:10–12 ''भाइयों ने तुरन्त रात ही रात पौलुस और सीलास को बिरीया भेज दिया; और वे वहाँ पहुँचकर यहूदियों के आराधनालय में गए। ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे, और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्रशास्त्रों में ढूँढ़ते रहे कि ये बातें योंहीं हैं कि नहीं। इसलिये उनमें से बहुतों ने, और यूनानी कुलीन स्त्रियों में से और पुरुषों में से भी बहुतों ने विश्वास किया।'' यहाँ हम थिस्सलुनीके और बिरीया में दो कलीसियाओं के बारे में पढ़ते हैं। उन दिनों पवित्र शास्त्र हर घर में बाइबिल के रूप में नहीं था, बल्कि पवित्र मंदिर में रखे गए सूचीपत्र के रूप में थे। बिरीया के लोगों ने फिर से पवित्र मंदिर जाने का प्रयास किया और प्रेरित पौलुस द्वारा जो कुछ भी प्रचार किया गया था, उस पर सूचीपत्र की खोज की, इसे पढ़ा और वचन में विश्वास किया। इसलिए, बिरीया के लोग थिस्सलुनीके के लोगों की तुलना में बुद्धि और ज्ञान से भरे हुए थे। आज, एक छोटे बच्चे के पास भी पढ़ने के लिए अपना–अपना बाइबिल है, वचन हमारे हाथ में है, हमें वचन को सुनना चाहिए, उस पर विश्वास करना चाहिए, वचन को पढ़ना और फिर से पढ़ना चाहिए। यदि हम वचन पर विश्वास नहीं करते हैं, तो परमेश्वर का दूत हमें एक अधर्मी व्यक्ति के रूप में समझेगा। स्वर्गीय राज्य का द्वार यीशु मसीह के माध्यम से है, जो वचन है। यीशु मसीह स्वर्गीय राज्य की कुंजी है। वचन के बिना, हम कुछ नहीं कर सकते। आइए हम पढ़ें यूहन्ना 10:28 ''और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। वे कभी नष्ट न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।'' कोई भी जिसे पिता परमेश्वर ने बोया है, यीशु मसीह के हाथों से छीना नहीं जा सकता। पास्टर सरोजाजी के पास्टर बनने से बहुत पहले से यह भविष्यवाणी की गई थी। पास्टरजी का कहना है कि उन्हें बाहर और भीतर से कई लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं, लेकिन कोई भी पास्टरजी को यीशु के हाथों से नहीं छीन सका।

जिस हाथ में परमेश्वर के पास सात तारे थामे हुए है, उसी हाथों में अपने सेवकों और शिष्यों को थामे रखा है। सितारों का क्या काम है? जब सूर्य और प्रकाश नहीं होते तो तारे प्रकाश देते हैं। धर्मी का सूर्य यानी यीशु मसीह। वह आज कहाँ गए है? वह पिता परमेश्वर के पास गए है और पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है। तो अब प्रकाश कौन देता है? यह तारे हैं। सितारे कौन हैं? स्वर्गीयदूत है यानी आज दुनिया को रोशनी देने के लिए परमेश्वर के

सेवक और परमेश्वर के चुने हुए लोग ही काम करते हैं। यानी वचन का प्रकाश। यीशु लौटने वाले हैं और तब तक केवल वचन ही हमें प्रकाश दिखाएगा। वचन पाँव के लिये दीपक और हमारे मार्ग के लिये उजियाला है। परमेश्वर का वचन हमें जवानी से ही पाप करने से बचा सकता है। यह स्वर्गदूत हैं जो हमें इस दुनिया में प्रकाश दे सकते हैं, स्वर्गदूत इस प्रकार परमेश्वर के सेवक और शिष्य हैं।

आइए हम पढ़ें 2 पतरस 1:19–21 ''हमारे पास जो भविष्यद्वक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा। तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो कि वह एक दीया है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे। पर पहले यह जान लो कि पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती, क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।''

धर्म के सूर्य की वापसी तक, सितारों को इस दुनिया में प्रकाश देना पड़ेगा और हमें वचन के माध्यम से रास्ता दिखाना है। वचन को हमारी अगुवाई करनी चाहिए और सुबह का तारा की तरह हमारा मार्गदर्शन करना चाहिए। यह संसार पापों और अधर्म से भरा है। इस प्रकार प्रभु ने हमें दुनिया में अपना प्रकाश दिखाने के लिए तारे दिए हैं। आइए पढ़ते हैं मत्ती 5:14 ''तुम जगत की ज्योति हो। जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता।'' इस संसार में दिया हुआ प्रकाश संसार से अपने को छिपा नहीं सकता। परन्तु जिन्हें जगत में चुना गया है, कि वे इस जगत में प्रकाश करें, उन्हें जगत को धर्म का मार्ग दिखाना चाहिए। दानिय्येल 12:3 ''तब सिखानेवालों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा तारों के समान प्रकाशमान रहेंगे।'' जब हम प्रकाशितवाक्य में पढ़ते हैं कि प्रभु परमेश्वर ने प्रेरित यूहन्ना से सात कलीसियाओं के लिए स्वर्गदूतों को लिखने के लिए कहा, तो यहाँ हमें यह समझना चाहिए कि स्वर्गदूतों को लिखने की कोई आवश्यकता नहीं थी। प्रभु उनसे सीधे बात कर सकते हैं। स्वर्गदूतों से उनका मतलब उनके सेवकों और शिष्यों से था, इसलिए यह सभा के अधिकारीयों को लिखा जाना चाहिए जो वचन का प्रचार करते हैं, लोगों को धर्मी मार्ग दिखाने और इस दुनिया में प्रकाश दिखाने के लिए है। इस प्रकार जब तक यीशु वापस नहीं आते, यह स्वर्गदूतों का कार्य है कि वे अपना कार्य करें और इस संसार में प्रकाश डालें। हमें बिरीया के लोगों की तरह होना चाहिए, वचन को फिर से पढ़ना सीखने के लिए उत्साहित होना चाहिए और जो प्रचार किया जा रहा है उसकी पुष्टि करना चाहिए।

आइए हम भजन संहिता के कुछ उत्साहजनक वचनों को पढ़ें:

भजन संहिता 119:57 ''यहोवा मेरा भाग है; मैं ने तेरे वचनों के अनुसार चलने का निश्चय किया है।''

भजन संहिता 119:65 ''हे यहोवा, तू ने अपने वचन के अनुसार अपने दास के संग भलाई की है।''

भजन संहिता 119:9 ''जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे? तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से।''

भजन संहिता 119:28 ''मेरा जीव उदासी के मारे गल चला है; तू अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल!''

भजन संहिता 119:50 ''मेरे दुःख में मुझे शान्ति उसी से हुई है, क्योंकि तेरे वचन के द्वारा मैं ने जीवन पाया है।''

भजन संहिता 119:72 ''तेरी दी हुई व्यवस्था मेरे लिये हजारों रुपयों और मुहरों से भी उत्तम है।''

भजन संहिता 119:55-56 ''55 हे यहोवा, मैं ने रात को तेरा नाम स्मरण किया, और तेरी व्यवस्था पर चला हूँ। 56 यह मुझ से इस कारण हुआ, कि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए था।''

भजन संहिता 119:92 ''यदि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी न होता, तो मैं दुःख के समय नष्ट हो जाता।''

भजन संहिता 119:130 ''तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है; उससे भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं।

भजन संहिता 119:158 ''मैं विश्वासघातियों को देखकर उदास हुआ, क्योंकि वे तेरे वचन को नहीं मानते।''

वचन के बिना हम कुछ भी करने के योग्य नहीं हैं, इस प्रकार हमें इस संसार में स्वर्गदूतों के रूप में प्रकाश देने की आवश्यकता है। मत्ती 18:20 ''क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।'' वचन कहता है, ''जहां दो या तीन यीशु के नाम से इकट्ठे होते हैं, वहां मैं हूं'' प्रकाशितवाक्य 1:16 कहता है, ''वह अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिये हुए था, और उसके मुख से तेज दोधारी तलवार निकलती थी। उसका मुँह ऐसा प्रज्वलित था, जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है।'' हमने देखा है कि परमेश्वर ने अपने हाथों में सात तारे थामे हुए है, तो हमें भी उन्हीं हाथों में पकड़ने का स्थान है। हम

जानते हैं कि धार्मिकता का सूर्य अब पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है और आपके और मेरे लिए निवेदन कर रहे है। इसलिए अब दुनिया को रोशनी देना हमारा कर्तव्य है। जैसा कि प्रभु परमेश्वर ने प्रेरित यूहन्ना को सात कालीसियों के स्वर्गदूतों, यानी उनके सेवकों और शिष्यों को लिखने की आज्ञा दी थी। अतीत हो या वर्तमान, जब कोई राजा युद्ध लड़ने जाता है तो वह अपने साथ तलवार लेकर चलता है। आज हमारे परमेश्वर के पास राजाओं के समान तलवार नहीं है, परन्तु उनके पास संसार से लड़ने के लिए वचन है। यशायाह 11:4 कहता है ''परन्तु वह कंगालों का न्याय धर्म से, और पृथ्वी के नम्र लोगों का निर्णय खराई से करेगा; और वह पृथ्वी को अपने वचन के सोंटे से मारेगा, और अपने फूँक के झोंके से दुष्ट को मिटा डालेगा।'' वचन इस प्रकार शक्तिशाली है, केवल वचन के द्वारा ही परमेश्वर हमारी लड़ाई लड़ते है। यशायाह 45:2 ''"मैं तेरे आगे आगे चलूँगा और ऊँची ऊँची भूमि को चौरस करूँगा, मैं पीतल के किवाड़ों को तोड़ डालूँगा और लोहे के बेड़ों को टुकड़े टुकड़े कर दूँगा।'' प्रकाशितवाक्य 2:12 ''पिरगमुन की कलीसिया के दूत को यह लिख : ''जिसके पास दोधारी और तेज तलवार है, वह यह कहता है कि'' प्रभु परमेश्वर ने प्रेरित यूहन्ना से यह लिखने के लिए कहा कि वचन दोधारी तलवार है।''

अंत में, प्रभु परमेश्वर ने प्रकाशितवाक्य पुस्तक में कहा, स्वर्गदूतों को लिखो। यहां स्वर्गदूत का मतलब है प्रभु के सेवक और शिष्य। प्रकाशितवाक्य 19:15 ''तब सिंहासन में से एक शब्द निकला, ''हे हमारे परमेश्वर से सब डरनेवाले दासो, क्या छोटे, क्या बड़े; तुम सब उसकी स्तुति करो।'' जो लोग प्रभु की अवज्ञा करते हैं, प्रभु अवज्ञाकारी पर नजर रखते हैं। प्रभु का हर वचन हमारे लिए जीवन है। यहोशू में वचन कहता है यहोशू 9:14 ''तब उन पुरुषों ने यहोवा से बिना सलाह लिये उनके भोजन में से कुछ ग्रहण किया।'' हमने यहाँ पढ़ा है कि इस्राएलियों ने इन लोगों के साथ संबंध बनाए रखने के लिए परमेश्वर की सलाह नहीं ली। इस प्रकार, अंत में, ये लोग यहोशू के लिए एक जाल बन गए, वे युद्ध हार गए। हमें अपने हर काम को शुरू करने से पहले हमेशा प्रभु परमेश्वर से पूछना चाहिए। हमारे लिए उनकी इच्छा और योजना को जानना हमारे लिए महत्वपूर्ण है। यहोशू में हम ने पढ़ा, कि लोगों ने केवल अपनी संपत्ति में से खाया, परन्तु उन्होंने परमेश्वर की सम्मति मांगे बिना ऐसा किया। हमें कभी भी इन चीजों को अपने लिए जाल नहीं बनने देना चाहिए। यहां तक कि युद्ध में जाने से पहले के राजाओं ने भी परमेश्वर से सलाह मांगी और फिर आगे बढ़े, उन्हें अपने युद्धों में विजय प्राप्त हुई। दाऊद इसे हर समय करता था। हमें भी एक कदम आगे बढ़ने से पहले हमेशा प्रभु की सलाह लेनी चाहिए। आइए हम पढ़ें 2 तीमुथियुस 3:16-17 ''सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।'' हमारे लिए अच्छा क्या था? वचन दोधारी तलवार है। तारे को वचन के द्वारा संसार को प्रकाश दिखाना चाहिए। प्रभु यीशु ने कहा, ''तू मेरे हाथ में है, कोई तुझे

मेरे हाथ से नहीं छीन सकता''। इस प्रकार, केवल वही हमें स्थापित कर सकते है या हमें अपने हाथों से हटा सकते है। राजा शाऊल को हटा दिया गया और दाऊद को राजा बना दिया गया। हमारे जीवन में कार्य करना केवल परमेश्वर का विशेषाधिकार है। हमें हमेशा वचन में विश्वास रखना चाहिए न कि किसी व्यक्ति पर। परमेश्वर अपना वचन और उनका प्रकाशन केवल अपने सेवकों और शिष्यों को देते है। वचन जीवित और सत्य है। जब हम पाप, अन्धकार में होते हैं, और एक अधर्मी जीवन व्यतीत करते हैं, तो यह वचन ही है जो हमें ऊपर उठाएगा। परमेश्वर का प्रेम और दया हमारे लिए हर सुबह नई होती है। यूहन्ना 12:48 ''जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है: अर्थात् जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।'' परमेश्वर ने हमें वचन दिया है, वचन अंत में हमारा न्याय करेगा।

यह वचन हमारे जीवन में आशीर्वाद लाए !!

पास्टर सरोजा म।